Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2022

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान की अवस्थिति, आकृति, आकार एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान का भौतिक विस्तार	19
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र (नदियाँ)	54
4.	राजस्थान में झीलें	77
5.	राजस्थान की जलवायु एवं विशेषताएँ	89
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	100
7.	राजस्थान के वन्य जीव अभयारण्य	104
8.	राज्य में वन सम्पदा	122
9.	राजस्थान में कृषि	132
10.	राजस्थान में पशुधन	150
11.	राजस्थान में पशुसम्पदा	161
12.	राजस्थान की जनसंख्या	164
13.	राजस्थान की जनजातियाँ	169
14.	राजस्थान में पर्यटन उद्योग	177
15.	राजस्थान में औद्योगिक परिदृश्य	184
16.	राजस्थान में दुर्ग, मंदिर एवं हवेलियाँ	200
17.	राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल	234
18.	राजस्थान के गुर्जर प्रतिहार	239
19.	मेवाड का इतिहास	243
20.	जालौर एवं रणथम्भौर के चौहान	261

13. राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में 6 वाँ स्थान हैं ।
प्रथम – एम.पी
द्वितीय – महाराष्ट्र
तृतीय – उड़ीसा
चतुर्थ – बिहार
पंचम – गुजरात

राजस्थान में

- जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या – उदयपुर
- जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत – बाँसवाड़ा
- जनजातियों की न्यूनतम प्रतिशत – नागौर
- जनजातियों की न्यूनतम जनसंख्या – बीकानेर

1. कंजर

- कंजर शब्द ''काननचर'' से उत्पन्न हुआ हैं।
- कंजर जनजाति अधिकतर ''हाडौती क्षेत्र'' में निवास करती हैं।
- 1974 में चाँचेडा रसीद अहमद पहाडी द्वारा प्रसिद्धि दिलायी।
- इनके मुखिया का पटेल कहा जाता हैं।
- इनके घरों के पीछे खिडकियाँ अनिवार्य होती हैं।
- मोर का मांस इन्हें प्रिय हैं।
- आराध्य देवता – हनुमान जी
- आराध्य देवी – चौथ माता
- शव का दफनाते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में शराब डाली जाती हैं।
- महिलाएँ चकरी नृत्य करती हैं।
- नृत्य के समय जो पायजामा पहनती है उसे ''खुशनी'' कहा जाता हैं।
- कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय चोरी करना।
- चोरी करने से पहले देवताओं से आर्शीवाद लेते हैं। इसे ''पाती माँगना'' कहते हैं।
- हाकम राजा का प्याला पीकर कंजर कवि झूठ नहीं बोलते।

मुख्य देवता

1. 'जोगणिया माता'– ''कंजरो की कुलदेवी''
2. चौथ माता
3. रक्तदंजी माता
4. हनुमान जी

2. कथौड़ी

- मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति हैं।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में अधिक निवास करती हैं।
- ये लोग खैर के पेड़ से कत्था प्राप्त करते थे इसलिए इन्हें कथौड़ी कहा जाता हैं।

- ये शव को दफनाते हैं।
- कथौड़ी दूध नहीं पीते ये शराब अधिक पीते हैं।
- महिलाये भी साथ में शराब पीती हैं।
- ये लोग ''बंदर का मॉस'' खाते हैं।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती हैं लेकिन ''गोंदना'' बनवाती हैं।
- कथौडी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली साडी ''फड़का'' कहलाती है।
- इनके घरों को खोलरा कहा जाता है।
- पुरूषों द्वारा मावलिया एवं लावणी नृत्य किया जाता हैं।
- दल का नेता 'नायक' कहलाता है।
- महिलाऐं होली पर होली नृत्य करती हैं।
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त (विलुप्तप्राय) जनजाति है जिनके केवल 35–40 परिवार ही बचे हैं।
- राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में 200 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती हैं।

इनका मुखिया : ''नायक''

मुख्य देवताः

1. डूँगरदेव
2. वाघ देव
3. गम देव
4. भारी माता
5. कंसारी माता

3. डामोर : (डूँगरपुर)

- डूँगरपुर, बाँसवाडा और उदयपुर में निवास करती है।
- एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं हैं। खेती तथा पशुपालन करते हैं।
- अपनी उत्पति राजपूतों से मानते है।
- इनके मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है।
- गाँव को ''फलां'' कहा जाता है।
- डूँगरपुर जिले में अधिकतर जनसंख्या निवास करती हैं।
- सीमलवाड़ा पंचायत समिति (डूँगरपुर) को ड़ामरिया क्षेत्र कहा जाता हैं।
- ड़ामोर पुरूष एक से अधिक विवाह (बहुविवाह) करते हैं।
- वधू मूल्य को ''दापा'' कहा जाता हैं । (शादी के ऐवज में)
- ड़ामोर पुरूष भी महिलाओं की भॉति गहने पहनते हैं।
- ड़ामोर जनजाति की भाषा पर गुजराती भाषा का प्रभाव पड़ता हैं।
- होली के समय ''चाड़िया कार्यक्रम'' किया जाता हैं।

ड़ामोर जनजाति के मेले

1. छैला बावजी का मेला – पंचमहल (गुजरात)
2. ग्यारस की रेवड़ी का मेला – डूँगरपुर
    - मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता हैं।

आर्थिक संगठन

- गुजरात से ही डामोर आदिवासी खेती करते आये हैं। राजस्थान में बसने वाले डूँगरपुर के डामोरों के पास कृषि योग्य भूमि बहुत थोड़ी है। एक परिवार के पास औसतन 3–4 बीघा से अधिक जमीन नहीं है। यदि वर्षा हुई तो वे वर्ष में दो फसलें ले लेते हैं। खरीफ की फसल में ये आदिवासी मक्का और दालें पैदा करते हैं। कहीं–कहीं मूँगफली की फसल भी ली जाती है। रबी की फसल में मुख्यतः चना लिए जाते हैं। नगद फसल लेने का रिवाज अभी में नहीं चला। पिछले चार दशकों के विकास कार्यक्रमों के चलने के परिणामस्वरूप डामोर आदिवासी में आधुनिक कृषि के प्रति जागृति आयी हैं। वे रासायनिक खाद, सुधरे हुए बीज, कीटनाशक दवाईयों आदि का प्रयोग करने लगे हैं, उनकी सबसे बड़ी कठिनाई छोटी जाति का होना तथा साख का अभाव हैं। जिस संभाग में वे रहते हैं, वहाँ की भूमि उपजाऊ नहीं हैं। कुएँ के बिना सिंचाई नहीं हो सकती। कुओं का पानी भी बहुत गहरा है। अतः कृषि में जल के लिए ये लोग पूर्णतः वर्षा पर निर्भर हैं। ऐसी अवस्था में डामोर की कृषि अर्थव्यवस्था एक किताबी अर्थव्यवस्था की तरह ही है। जीविकोपार्जन के लिए उन्हें दिहाड़ी पर काम करना पड़ता है। इस जनजाति के जवानों को डूँगरपुर शहर तथा सागवाड़ा कस्बे में मजदूरी करते हुए देखा जा सकता हैं। कुछ डामोर तो अहमदाबाद और वड़ोदरा में मजदूरी के लिए जाते हैं।
- डामोर अर्थव्यवस्था की बहुत बड़ी त्रासदी यह है कि उनमें शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ। पढ़े–लिखे लोग बहुत थोड़े हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग सरकारी नौकरी में आरक्षण के होते हुए भी प्रवेश नहीं कर पाते हैं । शिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में वे अपनी अर्थव्यवस्था को अन्य आदिवासियों की तरह अनेकता नहीं दे पाए, अतः आर्थिक दृष्टि से डामोर आदिवासी उपयोजन क्षेत्र में होते हुए भी विपन्नावस्था में हैं।

4. सांसी

- उत्पति सांसमल से मानी जाती है।
- सबसे अधिक जनसंख्या भरतपुर और झुंझुनू जिले में हैं।
- एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती।
- सांसी जनजाति में 2 उपजाति होती हैं।
  1. बीजा
  2. माला
- ''भाखर बावजी'' की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते।
- कूकड़ी रस्म : विवाह से पहले लड़की के चरित्र की परीक्षा लेते हैं।
- सिकोदरी माता इनकी आराध्य देवी है।

अर्थव्यवस्था – साँसी जनजाति के सदस्य घुमंतू जीवन व्यतीत करते हैं। वे जंगली जानवरों का शिकार करते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ हस्तशिल्प और कृषि व्यवसाय का भी कार्य करते हैं।

5. गरासिया

सिरोही के आबू, पिण्ड़वाड़ा
पाली के बाली → क्षेत्र में अधिक निवास करती हैं।

- उदयपुर के गोगुन्दा
- घर–घर कहलाते है।

- बिखरे गाँव पाल कहलाते है।
- एक ही गाव के फालिया कहलाते है।
- नक्की झील इनका पवित्र स्थान हैं यहाँ अस्थियों का विसर्जन करते हैं।
- होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को 'चडिया' कहते है।
- मृत्यु के 12 वें दिन दाह संस्कार करते है।
- सफेद पशु व मोर को भी पवित्र मानते हैं।

इनमें 3 प्रकार की पंचायत होती हैं।
1. मोती न्यात ''बाबोर हाइया'' कहलाते हैं।
2. नेनकी न्यात ''माडेरिया''
3. निचली न्यात

- इनमें प्रेम विवाह अधिक होते हैं। सियावा (सिरोही) गॉव के गणगौर मेले में
- झेला बावसी का मेला, ग्यारसी की खाडी का मेला

विवाह के प्रकार

1. मोर बंधिया
2. ताणना (पैसे देकर लाना)
3. पहरावणा (कपड़ो के बदले)
4. मेलवो (मुकलावा करना)
5. खेवणो (शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ शादी करें)
6. सेवा

खेवणों : माला विवाह भी कहते हैं।
सेवा : घर जवाई बनवाकर (शादी से पहले) काम करवाते हैं।
गरासिया महिलाएँ सुन्दर तथा श्रृंगार प्रिय होती हैं। कुँआरी लडकिया लाख का चूडा पहनती है।
शादीशुदा हाथी दांत का चूडा पहनती है।
गरासिया पुरूष + भील महिला – भील गरासिया
गरासिया महिला + भील पुरूष – गमेती गरासिया
मुखिया : सहलोत/पालवी
गरासिया जनजाति की सहकारी संस्था –हेलरू
मृतक का स्मारक – हूरे इनकी स्थापना कार्तिक पूर्णिमा को की जाती है।

- अनाज की कोठियां सोहरा कहलाती है।
- मृत्यु भोज कांदिया, मेक या गेह।
- सामूहिक कृषि थावरी या हारी कहलाई जाती है।
- इनकी शगुन चीडी डुबकी है जिसकी मकर सक्रांति पर पूजा की जाती हैं।

मेले

1. कोटेश्वर मेला – अम्बाजी (गुजरात)
2. चेतर – विचितर मेला – देलवाड़ा (सिरोही)

गरासियों का आर्थिक तंत्र – यद्यपि गरासिया लोग वनों में रहते हैं। वन ही उनके जीवन का मुख्य अंग एवं आधार है। फिर भी 85 प्रतिशत गरासिया कृषि कार्य में लगे हुये हैं। यह मक्का पैदा करते हैं। कभी–कभी पानी मिलने पर गेहूँ, जौ भी पैदा कर लेते हैं। गरासिया के यहाँ एक ही फसल होती है। वर्ष के अन्य भागों में लकड़ी काटना, मजदूरी करना, ढोर चराना, शिकार आदि कार्य करते हैं। भीलों की तुलना में गरासिया अधिक सम्पन्न होते हैं।

आर्थिक संगठन – आजकल सरकार ने गरासियों को शिक्षित करने के लिए स्कूल खोले हैं। कुछ चिकित्सा सम्बन्धी प्रबन्ध भी किया है। कुछ गरासिया सेना में भर्ती हो गए हैं। कुछ आबू के पर्यटन केन्द्र होने से पर्यटकों की सेवा में लग गए हैं तथा सड़कों एवं यातायात के साधनों में भी लग गए हैं। इन पर भी ईसाई पादरी अपना प्रभाव जमाने के लिए सब प्रकार के प्रयत्न कर रहे हैं, जो भविष्य में संकट पैदा करने वाली बात है।

6. सहरिया

निवास : किशनगंज, शाहबाद

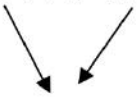

बारां

- भारत सरकार ने सहरिया जनजाति (राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति) को आदिम जनजाति का दर्जा दिया हैं ।
- राजस्थान सरकार मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार (अकाल में = 250 दिन)
- 3 प्रकार की पंचायत :
  पंचताई (पाँच गाँव की पंचायत)
  एकदसिया (11 गाँव की)
  चौरासी (84 गाँव की)
- चौरासी गाँव की पंचायत – वाल्मीकि मन्दिर (सीताबाड़ी) में
- सहरिया जनजाति वाल्मीकि को अपना आदिपुरूष मानती हैं।
- सहरिया जनजाति में युगल नृत्य नहीं होता।
- श्राद्ध नहीं करते।
- महिलाऐं टैटू बनवाती है लेकिन पुरूष नहीं बनवा सकते।
- दहेज प्रथा नहीं हैं।
- महिलाऐं घर में घूंघट करती है बाहर नहीं करती हैं।
- कुल देवी – कोड़िया माता
- तेजाजी व भैरूजी की भी पूजा करते हैं।
- लठमार होली खेलते हैं।
- मकर संक्रांति पर लकड़ी के डण्डों से लेंगी नामक खेल खेलते हैं।
- दीपावली पर हीड़ गाते हैं।
- वर्षा – ऋतु में आल्हा व लहंगी गाते हैं।
- मुखिया : कोतवाल
- इनके गाँव को – सहरोल
- छोटी बस्ती को – सहराणा
- हार को – टापरी
- समान रखने की कोठरी को–कुसिला
- गाँव के बीच सामुदायिक केन्द्र होता हैं। जिसे ढ़ालिया, हथाई, या बंगला कहते हैं।
- पेड़ों पर घर बना कर रहते हैं।
- पेडो पर बने घर को गोपना, टोपा, कोरूआ करते हैं।
- ''धारी संस्कार''(मृतक का) किया जाता हैं।
- सहरिया महिलाएँ गोदना गुदवाती है और पुरूषों मे मना है।
- सहरियों में राय नृत्य प्रसिद्ध है।
- मामूनी संस्था इनके विकास हेतु प्रयास।

15. राजस्थान में औद्योगिक परिदृश्य

राजस्थान में औद्योगिक विकास का क्रम निम्न है –

1. **प्राचीन काल** – औद्योगिक दृष्टि से सम्पन्न था। उदाहरण – सभ्यताएँ।
2. **मध्यकाल** – अंग्रेजी शासन के कारण औद्योगिक इकाई नष्ट।
3. **वर्तमान** – (आजादी के समय)
   राजस्थान में केवल 11 वृहद इकाइयाँ थी।
   राज्य औद्योगिक दृष्टि से पिछडा हुआ था।

औद्योगिक विकास हेतु आधारभूत घटक

1. खनिजों की उपलब्धता की कमी
2. ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता की कमी
3. सरकार की नीतियाँ

राजस्थान में औद्योगिक नीतियाँ

प्रथम नीति – 1978 – भैरोसिंह शेखावत

उद्देश्य → लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास

दूसरी औद्योगिक नीति – 1991 – भैरोसिंह शेखावत

उद्देश्य → रोजगार अवसर बढाना – कृषि + खनन

तीसरी औद्योगिक नीति – 1994 – भैरोसिंह शेखावत

उद्देश्य → तीव्र औद्योगिक विकास

चौथी औद्योगिक नीति – 1998

उद्देश्य → राज्य में औद्योगिक विकास के विशिष्ट ढाँचे का विकास करना।

पाँचवी औद्योगिक नीति – 2010

उद्देश्य → औद्योगिक विकास के आधारभूत ढाँचे का विकास करना।

छठीं औद्योगिक नीति – 2015 (MSME)

MSME = M = Micro = सूक्ष्म / लघु उद्योग
S = Small = छोटे उद्योग
M = Medium = मध्यम उद्योग
E = Enterprises = उद्योग

औद्योगिक

- सर्वाधिक उद्योगों वाला जिला – जयपुर
- न्यूनतक उद्योगों वाला जिला – जैसलमेर
- उद्योगों की दृष्टि से पिछडा जिला – जालौर
- सबसे छोटी औद्योगिक नगरी – करौली

- राजस्थान की औद्योगिक नगरी – कोटा
- सर्वाधिक वृहद इकाइयों वाला जिला – अलवर
- सर्वाधिक छोटी इकाइयों वाला जिला – जयपुर
- सर्वाधिक विदेशी कम्पनियों वाला जिला – अलवर
- राजस्थान की सिलिकॉन वैली – जापानी जॉन– कोरियाई जॉन–खुशखेडा (अलवर),
- भीलवाडा – टैक्सटाइल सिटी/वस्त्र नगरी/ अभ्रक नगरी/ तकनीकी शहर/ राजस्थान का मैनचेस्टर
- राजस्थान का नवीनतम मैनचेस्टर – भिवाडी (अलवर)
- राजस्थान में जिला उद्योग केन्द्र – 36
- उपजिला उद्योग केन्द्र – 8
- काउंटर मैग्नेट सिटी का दर्जा प्राप्त शहर – कोटा व जयपुर।
  ये राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन सी आर) की तर्ज पर विकसित क्षेत्र है। जिसका मुख्य उद्देश्य एन सी आर के दबाव को कम करना है।

उद्योगों का वर्गीकरण

1. पूँजी व निवेश के आधार पर

उद्योग	विनिर्माण (नई वस्तु निर्माण)	सेवा
कुटीर उद्योग	25 लाख से कम	10 लाख से कम
लघु उद्योग	25 लाख से 5 करोड	10 लाख से 2 करोड
मध्यम उद्योग	5 से 10 करोड	2 से 5 करोड
वृहद उद्योग	10 करोड से अधिक	5 करोड से अधिक

2. स्वामित्व के आधार पर

- निजी उद्योग
- सार्वजनिक उद्योग
- सहकारी उद्योग (PPP) Public Private Partnership

3. कच्चे माल की उपलब्धता के आधार पर

- रसायन आधारित
- खनिज अयस्क आधारित
- कृषि आधारित उद्योग
- वन (लाख, गौंद, ईमारती लकडी) आधारित उद्योग

राजस्थान में औद्योगिक विकास हेतु कार्यरत संस्थाएँ

RIICO – राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम लिमिटेड RIICO का पूरा नाम है।
मुख्यालय – जयपुर
स्थापना – 1979
कार्य प्रारम्भ – 1 जनवरी 1980
RIICO द्वारा 2016 तक 239 औद्योगिक क्षेत्र विकसित।

कार्य

1. औद्योगिक विकास के आधारभूत ढाँचे का विकास करना।
2. उद्यमियों को ऋण उपलब्ध कराना।
3. औद्योगिक विकास को बढावा देना।
4. सेज, निर्यात संवर्द्धन पार्क, विशिष्ट थीम पार्क, विशिष्ट औद्योगिक पार्कों की स्थापना करना।
5. Plug and Play करें और खेलें जयपुर
   सेज (SEZ) – Special Economic Zone विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र

स्थापना

राजस्थान विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र विकास अधिनियम के द्वारा – 10 दिसम्बर, 2003 में।
उद्देश्य – उत्पादन शुल्क एवं अन्य शुल्क मुक्त।

1. हस्तशिल्प एवं ग्वारगम सेज – बोरनाडा (जोधपुर)
2. जेम्स एण्ड ज्वैलरी सेज 1 – सीतापुरा (जयपुर)
3. जेम्स एण्ड ज्वैलरी सेज 2 – सीतापुरा (जयपुर)
4. सूचना प्रौद्योगिकी सेज – जयपुर
5. ऊँन एवं गलिचा सेज – बीकानेर
6. महिन्द्रा वर्ल्ड सेज – जयपुर (राज्य की प्रथम निजी सेज है)
7. इंजीनियरिंग सेज – जयपुर
8. हैण्डीक्राफ्ट सेज – जयपुर + जोधपुर (हाल में स्वीकृत)
9. सोमानी सेज – अलवर
10. वाटिका सेज – जयपुर
11. जैनपेक्ट सेज – बीकानेर
12. DLF सेज – अलवर
13. अंसल सेज – कोटपूतली – जयपुर
14. चेतक सेज – भीलवाडा
15. मल्टी प्रोडेक्ट सेज – धौलपुर

औद्योगिक निर्यात एवं संवर्धन पार्क

सीतापुरा – जयपुर
बोरनाड़ा – जोधपुर
नीमराणा – अलवर

- Mega Food Park (मेगा फूड पार्क) कृषि आधारित उद्योगों का विकास करना
- रूपनगढ (किशनगढ) अजमेर
- लागत – 113.57 करोड उद्घाटन – 30 मार्च 2018 – उद्घाटन – हरसिमरत कौर (खाद्य प्रसंस्करण मंत्री)
- फूड पार्क – कोटा, जोधपुर, गंगानगर, अलवर
- निजी क्षेत्र का फूड पार्क – झालावाड।

विशिष्ट थीम पार्क

- ऑटो पार्क – चोंपकी (अलवर)
- जेम्स एण्ड ज्वैलरी पार्क – सीतापुरा (जयपुर)
- हस्तशिल्प एवं ग्वारगम पार्क – बाँसवाडा, जोधपुर
- लैदर पार्क – मानपुरा माचेड़ी – जयपुर
- C-Dos पार्क – जयपुर (स्टोन)
- साइबर पार्क – जोधपुर
- बायोटेक्नोलॉजी पार्क – जयपुर
- होजरी पार्क – भिवाडी व चोंपकी (अलवर)
- सिरेमिक्स पार्क – खारा (बीकानेर), घिलोठ (अलवर)
- सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क – कनकपुरा–जयपुर
- इलेक्ट्रॉनिक्स पार्क – कूकस (जयपुर)
- गारमेंटस पार्क – अलवर
- ऑटोमोबाइल पार्क – टपुकडा (अलवर) ,खुशखेडा (अलवर), इन्द्रप्रस्थ (कोटा)।
- जापानी पार्क – नीमराणा व घिलोठ (अलवर)
- कोरियाई पार्क – नीमराणा व घिलोठ (अलवर)
- मार्बल पार्क – किशनगढ (अजमेर)
- IT पार्क – जयपुर–जोधपुर–कोटा–उदयपुर–अलवर

राजस्थान में लघु उद्योग विभाग

RAJSICO – स्थापना – जून 1961, मुख्यालय – जयपुर

कार्य

उद्देश्य → लघु और हस्तशिल्प इकाइयों को वित्तीय, तकनीकी सहायता, कच्चा माल देना एवं विपणन में सहायता करना।

राजसीको हस्तशिल्प निर्मित वस्तुओं को एक छत्त के नीचे लाने के लिए "राजस्थली एम्पोरियम" द्वारा राजस्थली शोरूम –2007 जयपुर का संचालन करता है।

इस शोरूम में शाहपुरा का चित्रण–कोटा–बून्दी शैली मारवाड की चित्रशैली राजसीको द्वारा जयपुर हवाई अड्डे पर "एयरकार्गो कॉम्प्लेक्स की स्थापना" 1979 में की गई। उद्देश्य–औद्योगिक निर्यात को बढावा देना।

शुष्क बन्दरगाह डिपो की स्थापना

- बासनी (जोधपुर)
- मानसरोवर (जयपुर)
- भिवाडी (अलवर)
- भीलवाड़ा (पावरलूम मेगा कलस्टर)

निर्माणाधीन

- बाराबंकी – करौली
- सीतापुरा – जयपुर
- बीकानेर

नोट – केन्द्र सरकार ने राज्य में शुष्क बन्दरगाह डिपो की स्थापना निम्न स्थानों पर की है।
जयपुर–जोधपुर–कोटा–उदयपुर

नोट – निजी क्षेत्र का शुष्क बन्दरगाह डिपो– पालगाँव (जोधपुर)।

महत्वपूर्ण - शुष्क बन्दरगाह – सांचौर (जालौर) (अडानी ग्रुप द्वारा) स्थापित।

RUDA – ग्रामीण गैर कृषि भूमि विकास अभिकरण – 1995 (जयपुर)

कार्य –

- गैर कृषि आजिविका साधनों का विकास करना जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थाई रोजगार साधनों का विकास हो।
- RUDA द्वारा आमेर महल जयपुर में "शिल्पांगना" 2009 से प्रारम्भ।
- राजस्थान में खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड स्थापना–1955

उद्देश्य → ग्रामीण क्षेत्र में खादी एवं ग्रामीण आधारित अन्य उद्योगों को बढावा देना।

RAJCOL (Rajasthan Consultancy Organization Limited)

स्थापना 1978 ,मुख्यालय – जयपुर।

कार्य

- औद्योगिक इकाइयों को परामर्श देना।
- राजस्थान हथकरघा विकास निगम लिमिटेड स्थापना – 1984 (जयपुर)
- जिला उद्योग केन्द्र = 36 (1978)
- राज्य में औद्योगिक विकास हेतु जिला स्तर पर नोडल एजेन्सी का कार्य करना।

उपजिला उद्योग केन्द्र

- नीमराणा – अलवर।
- मकराना – नागौर।
- आबू – सिरोही।
- किशनगढ – अजमेर।
- ब्यावर – अजमेर।
- बालोतरा – बाडमेर।
- फालना – पाली।
- सुजानगढ (नवीनतम) – चूरू।

RIPS (Rajasthan Investment Promotion Scheme)

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना

- 2010, 2014, 2019 – दिसम्बर –2019 को जयपुर में MSME कॉन्कलेव में घोषणा –
- विद्युत के स्थायी शुल्क में 100% छूट = 7 वर्ष
- मण्डी शुल्क 100% छूट = 7 वर्ष
- भूमि हस्तान्तरण 100% छूट = 7 वर्ष
- स्टाम्प ड्यूटी 100% छूट = 7 वर्ष

18. गुर्जर प्रतिहार

- बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन II का कर्नाटक से एक ऐहोल अभिलेख प्राप्त हुआ है इसकी भाषा संस्कृत है और रचनाकार रविकीर्ति है।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को पराजित किया था।

गुर्जर प्रतिहार/राजपूत काल/सामन्त काल (700–1200 ई.)

उत्पत्ति	संस्थापक	त्रिपक्षीय संघर्ष [2nd Grade 1st Paper - 2018]
1. पृथ्वीराज रासौ के अनुसार गुरू वशिष्ठ के अग्निकुण्ड से प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान उत्पन्न हुए	हरिश्चन्द्र (रोहलिद्धी)	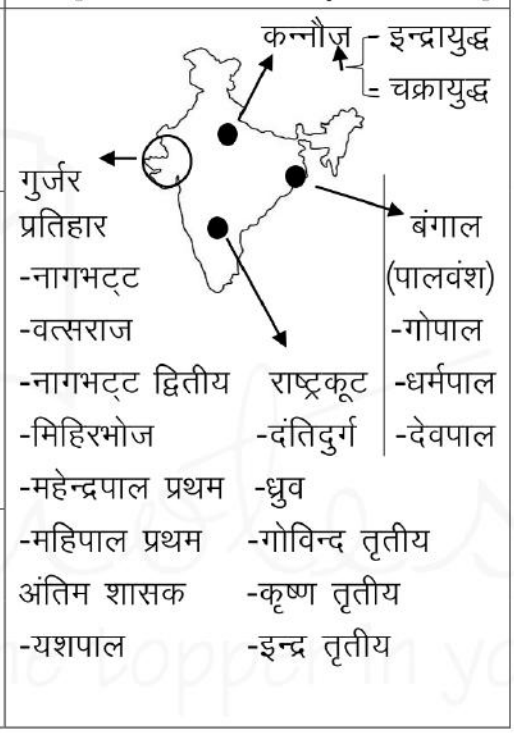
2. जेम्स टॉड के अनुसार खंजर जाति से विदेशी	पुत्र रज्जिल–राजधानी–मंडोर दह भोगभट्ट कदक	
3. हेनसांग के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार क्षत्रिय थे।	शिलालेख – घटियाला शिलालेख	
4. मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में लक्ष्मण का अवतार बताया गया।		

- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज को प्राप्त करने के लिए पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष लड़ा गया जिसमें कन्नौज अंतिम रूप से गुर्जर प्रतिहारों को प्राप्त हुआ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर एक भौगोलिक शब्दावली है जबकि प्रतिहार पद की जानकारी देता है जो कि राजा के महल के बाहर रक्षक का कार्य किया करते थे।
- हेनसांग ने गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र को कु.चे.लो. व राजधानी को पीलोभोलो कहा है।

[2nd Grade 1st Paper - 2018]

- अरब यात्री अलमसूदी के गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र के लिए अलगुर्जर, गुर्जर प्रतिहारों के लिए जुर्ज तथा राजा के लिए बौरा शब्द का प्रयोग किया है।
- डॉ. गौरीशंकर औझा के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार शासक क्षत्रिय थे।
- मुंहणोत नैणसी के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएँ थी। जिसमें से 2 शाखा महत्त्वपूर्ण थी –
  1. मंडोर के गुर्जर–प्रतिहार
  2. भीनमाल के गुर्जर–प्रतिहार
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से भी गुर्जर प्रतिहार शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

- **संस्थापक** – जोधपुर से प्राप्त घटियाला शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक हरिश्चन्द्र को माना जाता है। हरिश्चन्द्र के पुत्र रज्जिल ने मंडोर को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- **रज्जिल** – रज्जिल के द्वारा राजसूय यज्ञ का आयोजन किया गया। यह राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर किया जाता था। रज्जिल के दरबारी विद्वान नरहरी ने 'रज्जिल' को राजा की उपाधि दी है।
- **नरभट्ट** – नरभट्ट को गुरु व ब्राह्मणों का संरक्षक कहा गया है।
  हेनसांग ने नरभट्ट के लिए शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है – साहसिक कार्य करने वाला।
- नागभट्ट नामक व्यक्ति गुर्जर–प्रतिहार शासक बना। इसने अपनी राजधानी 'मंडोर' से मेड़ता स्थानान्तरित की थी। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

भीनमाल (जालौर) के गुर्जर–प्रतिहार

यहाँ के शासकों ने स्वयं को रघुवंशी प्रतिहार कहा।

नागभट्ट प्रथम – 730 – 760 ई.

उपाधि – नागावलोक, मल्लेच्छों का नाशक, नारायण की मूर्ति का प्रतीक

[2nd Grade 1st Paper - 2019]

राजधानी – भीनमाल (जालौर)

- नागभट्ट प्रथम ने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित किया जो कि शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र माना गया।
- उज्जैन में नागभट्ट I के द्वारा हिरण्य गर्भदान यज्ञ का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य पुत्र रत्न की प्राप्ति करना था।
- नागभट्ट प्रथम ने राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग को भी इस यज्ञ के दौरान आमंत्रित किया था, अतः इस समय त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत नहीं हुई थी।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट I को मलेच्छों का नाशक कहा गया।
- पुलकेशियन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में नागभट्ट I को गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा गया।
- नागभट्ट प्रथम के बाद कक्कुल व देवराज गुर्जर प्रतिहार शासक बने।

वत्सराज – 783 – 95 ई.

उपाधि – रणहस्तिन (युद्ध का हाथी)
जयवराह – दुग्गल नामक ब्राह्मण के द्वारा दी गयी क्योंकि वत्सराज ने वैष्णव धर्म को संरक्षण प्रदान किया था।

- वत्सराज के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत हुई।
- वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार किया।
- बंगाल के शासक धर्मपाल को मुंगेर के युद्ध में पराजित किया, परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के हाथों पराजित हुआ।
  इस प्रकार वत्सराज के काल में कन्नौज पहली बार गुर्जर–प्रतिहारों को प्राप्त हुआ और वत्सराज के काल में कन्नौज गुर्जर प्रतिहारों के हाथों से निकल गया।
- वत्सराज के काल में गुर्जर प्रतिहारों का साम्राज्य विस्तार बंगाल तक हुआ।
- राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने अपनी उत्तर भारत विजय के उपलक्ष्य में गंगा व यमुना को अपने प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया था।

- वत्सराज के काल में संस्कृत भाषा में बली प्रबंध नामक लेख की रचना हुई जिसमें गुर्जर–प्रतिहार काल में प्रचलित सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था। वत्सराज के काल में जोधपुर के औसियां नाम स्थान पर महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण हुआ। यह पश्चिमी भारत का सबसे प्राचीन जैन मंदिर माना जाता है। गुर्जर–प्रतिहार शासकों द्वारा महामारू शैली में मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। महामारू शैली से तात्पर्य है – एक स्थान पर एक से ज्यादा मंदिरों का निर्माण।
- वत्सराज के काल में उद्योतन सूरी व जिनसेन सूरी नामक विद्वान हुए। उद्योतन सूरी के द्वारा ''कुवलयमाला'' तथा जिनसेन सूरी के द्वारा ''हरिवंश पुराण'' की रचना की गयी।

नागभट्ट द्वितीय (795–833 ई.)

- **उपाधि** – परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट द्वितीय को कर्ण कहा गया। नागभट्ट द्वितीय के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। इस समय राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय था। गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया था।
- गोविन्द तृतीय को जब दक्षिण में व्यस्त था तब नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण करके चक्रायुद्ध को पराजित किया और कन्नौज में गुर्जर प्रतिहारों की एक शाखा स्थापित की थी। नागभट्ट द्वितीय ने बंगाल के शासक धर्मपाल को भी हराया था।
- नागभट्ट द्वितीय के काल में जोधपुर के बुचकला नामक स्थान पर शिव–पार्वती व विष्णु मंदिर का निर्माण हुआ।
- नागभट्ट द्वितीय के बारे में जानकारी चन्द्रप्रभुसूरी की पुस्तक प्रभावक चरित्र से प्राप्त होती है।
- नागभट्ट द्वितीय के द्वारा गंगा में समाधि ली गयी थी।

रामभद्र (833–36 ई.)

रामभद्र के काल में मंडोर के गुर्जर प्रतिहार स्वतंत्र होने लगे। बंगाल के पाल शासकों ने भी गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। अतः रामभद्र की हत्या उसके पुत्र मिहिरभोज के द्वारा कर दी गयी। मिहिरभोज को गुर्जर प्रतिहार शासकों का पितृहन्ता कहा जाता है।

मिहिरभोज (836–855 ई.)

- **उपाधि** – आदिवराह (जयवराह की उपाधि वत्सराज ने धारण की थी)
  प्रभासपाटन
  संपूर्ण पृथ्वी का विजेता (बग्रमा अभिलेख, उत्तरप्रदेश)
- मिहिर – सूर्य का प्रतीक
- जानकारी के स्त्रोत
  - ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)
  - सागरताल प्रशस्ति (मध्यप्रदेश)
  - बग्रमा अभिलेख
- वैष्णव धर्म को संरक्षण दिये जाने के कारण आदिवराह की उपाधि ली जिसकी जानकारी ग्वालियर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- मिहिरभोज ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय को पराजित करके कन्नौज व मालवा पर अधिकार किया था।

- अरब यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज के काल में भारत की यात्रा की थी। सुलेमान मिहिरभोज को मुसलमानों का कट्टर शत्रु व इस्लाम की दीवार कहता है। मिहिरभोज ने अरब आक्रमणकारी जुनैद खाँ को पराजित किया और ताजिये निकाले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- मिहिरभोज के द्वारा चाँदी व ताँबे के सिक्कों का प्रचलन करवाया व इन सिक्कों पर श्रीमद् आदिवराह अंकित करवाया था।

महेन्द्रपाल प्रथम (885–910 ई.)

- **उपाधि** – रघुकुल, चूडामणि, निर्भय नरेश
- राजशेखर महेन्द्रपाल प्रथम के दरबारी कवि थे। राजशेखर के द्वारा निम्न पुस्तकों की रचना की गयी– कर्पूर मंजरी, बाल रामायण, विद्धशाल भंजिका, भुवनकोश, हरविलास, काव्य मीमांसा

महिपाल प्रथम (914–43 ई.)

- **उपाधि** – रघुकुल मुक्तामणी, मुकुटमणि, आर्यावर्त का महाराजाधिराज
- राजशेखर महिपाल I के भी दरबारी विद्वान थे।
- महिपाल प्रथम के काल में बगदाद निवासी 'अलमसूदी' ने भारत की यात्रा की थी।
- 1018 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया था। इस समय कन्नौज का शासक राजपाल/राज्यपाल था।
- 11वीं शताब्दी में गहड़वाल वंश के शासकों ने कन्नौज पर अधिकार किया था। कन्नौज का अंतिम शासक यशपाल था।

19. दिल्ली सल्तनत के संबंध – मेवाड़, जालौर, रणथम्भौर

मेवाड़

- मेवाड़ का प्राचीन नाम – महाभारत काल में – शिविजनपद
- शिविजनपद की राजधानी मध्यमिका थी। मध्यमिका को वर्तमान में नगरी कहा जाता है।
- मेदपाट – मेवजाति की अधिकता के कारण
- उदसर – भीलों के मुख्य क्षेत्र के कारण
- प्राग्वार – सम्पन्न शासक होने के कारण।
- मेवाड़ राज्य का झण्डा – महाराणा प्रताप के काल में निर्मित है।
- मेवाड़ का राज्य वाक्य – "जो दृढ राखे धर्म तिही राखे करतार"
- मेवाड़ राज्य के प्रमुख शस्त्र – भाला व तलवार।
- मेवाड़ राजाओं की सहयोगी जाति – भील – जो राजतिलक करते थे।
- मेवाड़ में गुहिल राजवंश शासन करता था।
- विश्व का सबसे प्राचीन जीवित राजवंश गुहिलवंश है।
- मेवाड़ में गुहिलवंश का संस्थापक/स्थापना – गुहिल/गुहादित्य/गुहिलोत के द्वारा।
- गुहिल वंश का कुल देवता – एकलिंगनाथजी –(भगवान शिव)
- मन्दिर – कैलाशपुरी (उदयपुर)
  - निर्माण – बापा रावल
  - पाशुपत सम्प्रदाय की पीठ है।
- आराध्य देव – गढबौर देव – मन्दिर राजसमंद (गढबौर चार भुजा नाथ)
- सिसोदिया वंश की कुल देवी – बाणमाता।
- गुहिलों की आराध्य देवी – गढबौर माता – राजसमन्द।
- गुहिल वंश की कुंल 24 शाखाऐं थी – कर्नल जेम्स टॉड व मुहणोत नैणसी ने बताया।
- गुहिल वंश की उत्पत्ति – अबुल – फजल के अनुसार – गुहिल वंश ईरान के बादशाह आदित्य नोशेनांद की संतान है।
- नोशेनांद, पत्नी धर्म परिवर्तन कर (ईसाई) भारत आते है। नोशेनांद पुनः ईरान पर आक्रमण करता है व मृत्यु को प्राप्त होता है।
- गोपीनाथ शर्मा – गुहिल मुख्यतः आनन्दपुर – बडनगर (गुजरात) के ब्राह्मण थे।
- डी. आर. देवीदत्त भण्डारक – गुहिलों की उत्पत्ति ब्राह्मणों से हुई है।
- कर्नल जेम्स टॉड – गुहिल वल्लभी नगर (गुजरात) शासक – शिलादित्य व रानी पुष्पावती के वंशज है।
- गुहिल रघुवंशी व सूर्यवंशी भी है – कर्नल जेम्स टॉड नयनचन्द्रपुरी।

भगवान सूर्य

- वंशज = चित्रस्वान → राजा दशरथ → श्रीराम → लवकुश → 108 वीं संतान – विजय भूप → (6 वीं संतान) → शिलादित्य → माता – सौभाग्य देवी
- सौभाग्य देवी के पति की विवाह से पूर्व ही मृत्यु हो गई थी, फिर सौभाग्य देवी के गुरू ऋषिदत्त द्वारा बीजमंत्र से शिलादित्य उत्पन्न होता है व वल्लभी का शासक बनता है।